गाँधीमय गुरुजी
(श्री रवीन्द्र शर्मा 'गुरुजी' के कार्यों का 15 खण्डों में प्रलेखन और संकलन)
पुस्तक लोकार्पण एवं विमर्श

भारत की मौखिक, ज्ञानकेन्द्रित संस्कृति संवाद परम्परा से परिपुष्ट होती रही है। श्री रवीन्द्र शर्मा 'गुरुजी' भी इसी परम्परा के संवाहक व्यक्तित्व हैं। इनके द्वारा भारतीय समाज, संस्कृति, कला, दर्शन, प्रौद्योगिकी आदि विभिन्न विषयों को जनसामान्य के समक्ष अत्यधिक सरल रूप में प्रस्तुत किया गया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा इनके द्वारा प्रस्तुत विषयों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इन्हें पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना बनायी गयी। इसी क्रम में भारत विद्या प्रयोजना प्रकल्प के अन्तर्गत 'भारत गाथा' एवं 'भारत कथा', शृंखलाओं का शुभारम्भ किया गया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भारत विद्या प्रयोजना प्रकल्प (फेज़-1) द्वारा दिनांक 21 अप्रैल, 2026 (मंगलवार) को 'भारत गाथा' ('भिक्षावृति', 'प्रौद्योगिकी', 'घर एवं वास्तु', 'सहज मानस, सामर्थ्य, कला, डिज़ाइन एवं सौन्दर्य-दृष्टि', 'भारतीय व्यवस्थाओं से सम्बन्धित कुछ अन्य लेख', 'भारतीय ग्राम व्यवस्था', 'भारतीय जाति व्यवस्था', 'भारतीय शिक्षा व्यवस्था', 'भारतीय समाज व्यवस्था के अन्य उप-तन्त्र' एवं 'भारतीयता का दुष्प्रचार') तथा 'भारत कथा' ('मसूरी संवाद', 'आदिलाबाद संवाद' – तीन भाग और 'बिजनौर संवाद') इन दो शृंखलाओं में प्रकाशित पन्द्रह पुस्तकों का विमोचन एवं विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कुल चार सत्र रहे।

उद्घाटन सत्र में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. राणा प्रताप सिंह, कुलपति, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा, सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, श्रीमती राजश्री शर्मा (स्व. श्री रवीन्द्र शर्मा 'गुरुजी' की धर्मपत्नी), डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पुस्तकों के संकलनकर्ता एवं

सम्पादक आशीष गुप्ता, संस्थापक, जीविका आश्रम, इन्द्राना, मध्यप्रदेश, प्रो. सुधीर लाल, अध्यक्ष, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं अन्य विद्वज्जनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। भारतीय परम्परा के अनुरूप कार्यक्रम का आरम्भ मंगलाचरण से हुआ। मंगलाचरण कलाकोश विभाग के सदस्यों ने प्रस्तुत किया। इसके अनन्तर मंचस्थ अतिथियों ने श्री रवीन्द्र शर्मा 'गुरुजी' को श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् डॉ. जोशी ने मंचस्थ अतिथि एवं सुधीजनों का अभिनन्दन किया। इसके बाद प्रो. सुधीर लाल ने प्रयोजना की पृष्ठभूमि एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारतीय दृष्टि एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य से भारत की सभ्यता, परम्पराओं और संस्कृति की व्याख्या हेतु केन्द्र द्वारा 2016 में भारत विद्या प्रयोजना की शुरुआत श्री रवीन्द्र शर्मा 'गुरुजी' के व्याख्यान से की गयी थी। गुरुजी लगभग 18 प्रकार की कारीगरी विद्याओं में निपुण थे तथा चार दशकों तक उन्होंने आदिवासी और लोक कलाओं के संरक्षण में अपना अप्रतिम योगदान दिया था। वे केवल कलाकार या कारीगर नहीं, अपितु इतिहासकार, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं दार्शनिक भी थे। वे भारतीय जीवन शैली, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जाति व्यवस्था, परम्पराओं और सौन्दर्यबोध का गहन अध्येता थे। उनकी सारस्वत साधना के संकलन एवं सम्पादनकर्ता श्री आशीष गुप्ता हैं, जो प्रारम्भिक जीवन से ही गुरुजी के सम्पर्क में रहे हैं। इसके अनन्तर मंचस्थ अतिथियों ने दोनों शृंखलाओं के अन्तर्गत प्रकाशित 15 पुस्तकों का विमोचन किया।

(बाएँ से दाएँ – प्रो. सुधीर लाल, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, प्रो. राणा प्रताप सिंह, मा. श्री सुरेश सोनी, प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, श्री आशीष कुमार गुप्ता, अम्माजी श्रीमती राजश्री शर्मा)

इसी शृंखला में 'क्रान्तदर्शी गुरुजी' फ़िल्म के टीज़र को प्रस्तुत किया गया। इसके बाद श्री आशीष गुप्ता ने 'भारत गाथा' एवं 'भारत कथा' शृंखला में प्रकाशित पुस्तकों के प्रतिपाद्य (भिक्षावृत्ति, प्रौद्योगिकी, घर एवं वास्तु, कला, जाति व्यवस्था, ग्राम व्यवस्था, कृषि, अर्थशास्त्र आदि) के सन्दर्भ में विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि ये सभी पुस्तकें बीजों का संरक्षण, स्मृति जागरण आदि अनेक दृष्टिकोणों से प्रासंगिक हैं। इनमें भारतीय विद्या एवं संस्कृति के बीजों का संकलन है, जिनसे प्रलयकाल में पुनर्सृष्टि की जा सकती है। इनमें विशुद्ध भारतीय दृष्टि से भारतीय व्यवस्थाओं को समझने के सूत्र निहित हैं, जो समाज की स्मृति जागरण में सहायक हैं।

इसी शृंखला में डॉ. जोशी ने प्रयोजना में प्रकाशित सभी पुस्तकों के उद्देश्य एवं महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इन सभी पुस्तकों में गुरुजी के विचार एवं दर्शन उल्लिखित हैं, जो भारतीय ज्ञान परम्परा का आधार है। उन्होंने प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था की चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय दृष्टि में निरक्षरता और अशिक्षा समानार्थी नहीं थे। व्यवहार कुशल, नैतिक और अन्न आदि के उत्पादक व्यक्ति को भी शिक्षित माना जाता था। इसीलिए खेत-खलिहान, यात्राएं, पर्व, कथावाचन, मेला, सत्संग, खेल ये सब शिक्षा के जीवन्त केन्द्र थे। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व, कर्तव्यबोध और समाजोपयोगी जीवन का निर्माण था। उन्होंने सभी पुस्तकों के प्रचार-प्रसार पर बल देते हुए यह जानकारी भी दी कि इन पुस्तकों का अन्य भाषाओं में अनुवाद सहित प्रकाशन हेतु नेशनल बुक ट्रस्ट ने सैद्धान्तिक सहमति दी है। इसके बाद प्रो. वरखेड़ी ने श्री रवीन्द्र शर्मा 'गुरुजी' सम्मत जाति व्यवस्था पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय जाति व्यवस्था की पुनर्व्यवस्था एवं पुनर्सृष्टि में गुरुजी का चिन्तन महत्त्वपूर्ण है। 'जाति' वस्तुतः 'ज्ञाति' है। यहाँ एक अक्षर मात्र (ज- ज्ञ) में परिवर्तन हुआ है, किन्तु दृष्टि बदल जाती है। 'जाति' का अभिप्राय तकनीक पर आधारित व्यवसाय से है। इसके पश्चात् प्रो. राणा प्रताप सिंह ने भारतीय ग्रामीण जीवन

प्रणाली की चर्चा करते हुए कहा कि यह विकास का दीर्घकालिक एवं स्थिर प्रतिमान है, इसका अन्य विकल्प नहीं हो सकता। इसे गहनता से जानने की आवश्यकता है। इस सत्र का संयोजन प्रो. सुधीर लाल ने किया।

प्रो. राणा प्रताप सिंह

प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी

प्रथम (भारत गाथा) सत्र में वक्ता के रूप में श्री लक्ष्मीदास, उपाध्यक्ष, गाँधी आश्रम, नई दिल्ली, प्रो. विजय चेरियार, आचार्य, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली, प्रो. पवन शर्मा, कुल सचिव, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली मंच पर उपस्थित रहे। सर्वप्रथम आइजीएनसीए के निदेशक प्रशासन डॉ. शाह फैज़ल ने सभी वक्ताओं का अभिनन्दन किया। इसके बाद वीडियो के रूप में संगृहीत गुरुजी के व्याख्यान का कुछ अंश प्रदर्शित किया गया। इसके अनन्तर श्री लक्ष्मीदास ने 'भिक्षावृत्ति', 'प्रौद्योगिकी', 'घर एवं वास्तु' (प्रथम तीन खण्डों) पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में तीन प्रकार की वृत्तियाँ रही हैं- कर्म वृत्ति (जल पदार्थ से सृष्टि करना), वैश्य वृत्ति (चेतन से चेतन पदार्थ की वृद्धि करना) एवं भिक्षा वृत्ति। यहाँ 'वृत्ति' का अभिप्राय 'व्यवसाय' से है। भिक्षावृत्ति की अनेक जातियाँ-उपजातियाँ थी। इसमें सभी कलाकारों को रखा जा सकता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था की बात करते हुए इन्होंने कहा कि देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था अत्यन्त समृद्ध एवं व्यवस्थित है, हमें इसे सम्यक् रूप में समझने की आवश्यता है, इसी के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसित किया जा सकता है। इसके पश्चात् प्रो. चेरियार ने 'सहज मानस, सामर्थ्य, कला, डिज़ाइन एवं सौन्दर्य-

दृष्टि' (चतुर्थ खण्ड) पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इन्होंने कहा कि इस खण्ड में सामाजिकता, परस्परता, समृद्धि एवं सौन्दर्य दृष्टि, आरोग्य, आनन्द, ऐश्वर्य तथा भक्ति आदि विषयों पर व्यापक रूप से विचार किया गया है। इसके बाद प्रो. पवन शर्मा ने गुरुजी के लोकशिक्षण व्यवस्था सम्बन्धी मत के सन्दर्भ विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि गुरुजी लोकशिक्षण के प्रबल पक्षधर थे। वे कहते थे कि लोकशिक्षण में लोक का कल्याण निहित है, क्योंकि इसमें किसी प्रकार की एषणा नहीं होती। इन दोनों शृंखलाओं में प्रकाशित पुस्तकों में लोकशिक्षण सम्बन्धी उनके जीवन के अनुभव एवं प्रसंग उल्लिखित हैं, जो वर्तमान शिक्षा व्यवस्था एवं समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं। इस सत्र का संयोजन कलाकोश विभाग के सह-आचार्य डॉ. योगेश शर्मा ने किया।

श्री लक्ष्मीदास

प्रो. पवन शर्मा

द्वितीय (भारत कथा) सत्र में वक्ता के रूप में प्रो. मोहम्मद महताब रिज़वी, कुलसचिव, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, डॉ. आर.के. अनिल, सदस्य, सेवा इंटरनेशनल संस्था, नई दिल्ली, श्री आशीष कुमार गुप्ता, संस्थापक, जीविका आश्रम, इन्द्राना, मध्यप्रदेश उपस्थित रहे। प्रो. सुधीर लाल ने सभी वक्ताओं का अभिनन्दन किया। इसके अनन्तर वीडियो के रूप में संगृहीत गुरुजी के व्याख्यान का कुछ अंश प्रदर्शित किया गया। इसके बाद डॉ. आर.के. अनिल ने 'आदिलाबाद संवाद' (द्वितीय खण्ड) में उल्लिखित गुरुजी के वास्तु विषयक विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि घर के पाँच लक्षण होते हैं- घर आरोग्ययुक्त हो, आर्थिक रूप से समृद्ध करे, आध्यात्मिक दिशा में अग्रसर करे, प्रकृति से प्रेम बढ़ाए एवं सामाजिक हो। इन दोनों शृंखलाओं में प्रकाशित सभी पुस्तकें विद्वानों एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त

महत्त्वपूर्ण हैं। इसी क्रम में श्री आशीष गुप्ता ने 'मसूरी संवाद' एवं 'बिजनौर संवाद' (प्रथम एवं तृतीय खण्ड) के प्रतिपाद्य पर चर्चा करते हुए बताया कि 'मसूरी संवाद' में गुरुजी के प्रौद्योगिकी एवं शिल्पकला आदि तथा 'बिजनौर संवाद' में अर्थव्यवस्था, स्वावलम्बी भारतीय समाज आदि विषयों से सम्बन्धित विचारों को संकलित किया गया है। इसके अनन्तर प्रो. रिज़वी ने भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृति एवं सभ्यता आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की तथा सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में उपर्युक्त विषयों को सम्मिलित किए जाने पर बल दिया। सत्र का संयोजन कलाकोश विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अरविन्द शर्मा ने किया।

क्रान्तदर्शी गुरुजी चलचित्र का प्रसारण

सभागार में उपस्थित प्रेक्षक

समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री सुरेश सोनी, प्रखर विचारक एवं चिन्तक, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, प्रो. सुधीर लाल, अध्यक्ष, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं अन्य विद्वज्जनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रो. सुधीर लाल ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इसके बाद श्री सुरेश सोनी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि गुरुजी के विचारों को पढ़ने एवं सुनने से जीवन की दिशा बदलती है, दृष्टि बदलती है, मन बदलता है। 'भारत गाथा' एवं 'भारत कथा' शृंखलाओं की सभी पुस्तकों में संकलित गुरुजी के व्याख्यान भारत की एक समग्र जीवनधारा को अनुभव करने एवं समझने हेतु

सार्थक हैं। कबीर कहते हैं कि 'तू कहता कागज की लेखी मैं कहता आँखन की देखी'।

मा. श्री सुरेश सोनी

डॉ. सच्चिदानंद जोशी

श्री सोनी जी ने आगे कहा किगुरुजी ने जो कहा है, वह आँखों की देखी है। भारत की जीवनयात्रा गुरुजी के शब्दों में अभिव्यक्त हो रही है। धर्मपाल जी के कथन को उद्धृत करते हुए इन्होंने कहा कि भारत के मूल को समझने के अनेक मार्ग हैं- वेदों से लेकर वर्तमान पर्यन्त भारत का सम्पूर्ण वाङ्मय, इससे भारत के दर्शन, मनोविज्ञान, जीवनमूल्य, समाज की जीवनयात्रा, इतिहास, परम्परा आदि के विषय में कुछ आभास मिल सकता है। भारत को जानने हेतु आए हुए विदेशी यात्रियों (ह्वेनसांग, इत्सिंग आदि) द्वारा लिखित यात्रावृतान्त, इनका अध्ययन कर भारत के विषय में कुछ जाना जा सकता है। वर्तमान समाज के अध्ययन से भी भारत को समझा जा सकता है। डॉ. जोशी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन्त प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रयोग करने हेतु गुरुजी का वाङ्मय सार्थक है। उन्होंने सभागार में उपस्थित सभी विद्वानों, विद्यार्थियों एवं अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। अन्त में शान्तिपाठ एवं 'क्रान्तदर्शी गुरुजी' चलचित्र-प्रसारण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

- **पूनम यादव, आकृति ठाकुर, स्रष्टि असाटी**
कलाकोश